ISSN: 0973-0583

आजमगढ़ जनपद के बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन का अध्ययन

चन्द्रशेखर प्रजापति

शोध छात्र, शिक्षा विभाग, गाँधी स्मारक पी0 जी0 कॉलेज समोधापुर, जौनपुर, उ0प्र0

सार तत्व

प्रस्तुत शोध आजमगढ़ जनपद के बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों के सामाजिक आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक समायोजन पर आधारित है जिसमें शोध के न्यादर्श का चुनाव उद्देश्यपूर्ण विधि द्वारा चयन किया गया है। न्यादर्श के रूप में 10 उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद के उच्च प्राथमिक विद्यालयों के 50 छात्रों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोध विधि के रूप में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोध कर्त्ता ने आंकड़ों के संग्रहण के लिए छात्रों का वार्षिक प्रतिफल, एच0एस0 अस्थाना द्वारा निर्मित शैक्षिक समायोजन मापनी, बी0के0 सिंह सुप्रीति सुमन तथा सावित्री शर्मा द्वारा निर्मित सामाजिक आर्थिक स्थिति मापनी का प्रयोग किया गया है। ऑकड़ों के विश्लेषण के लिए एनोवा परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध में उच्च प्राथमिक विद्यालयों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक समायोजन पर सामाजिक आर्थिक स्थिति के प्रभावात्मक अंतर पाया जाता है।

प्रस्तावना:

सामाजिक आर्थिक स्थिति इस बात का संदेश देता है कि व्यक्ति कार्य करने के लिए कितना तैयार है। यह व्यक्ति की संयुक्त आर्थिक और समाजशास्त्रीय स्थिति का कुल माप है, जो उसकी आय, शिक्षा और रोजगार के आधार पर अन्य लोगों के मुकाबले व्यक्तिगत और पारिवारिक आर्थिक और सामाजिक स्थिति का व्याख्यान देता है। जब एक परिवार के सामाजिक आर्थिक स्थिति का विश्लेषण किया जाता है, तो घर की आय, शिक्षा अभिविन्यास के स्तर और व्यवसाय का विश्लेषण किया जाता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने आजमगढ़ जनपद के बूढ़नपुर तहसिल के अन्तर्गत उच्च-प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययन करने वाले छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थिति एवं शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन का अध्ययन किया।

शोध समस्या:

आजमगढ़ जनपद के बूढ़नपुर तहसील के अन्तर्गत उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों के सामाजिक-आर्थिक स्थिति, शैक्षिक उपलब्धि और समायोजन का अध्ययन।

शोध के चर:

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर के अंतर्गत सामाजिक-आर्थिक स्थिति है तथा परतंत्र चर के अंतर्गत शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक समायोजन क्षमता निर्धारित किया गया है।

शोध चर का पारिभाषिकरण:

सामाजिक-आर्थिक स्थिति: सामाजिक आर्थिक स्तरद्ध सामाजिक आर्थिक स्थिति (इस बात का अंदेशा देता है कि व्यक्ति कार्य करने के लिए कितना तैयार है। यह व्यक्ति की संयुक्त आर्थिक और समाजशास्त्रीय स्थिति का कुल मापक है, जो उसकी आय, शिक्षा और रोजगार के आधार पर अन्य लोगों के मुकाबले व्यक्तिगत और पारिवारिक आर्थिक और सामाजिक स्थिति का व्याख्यान देता है।

शैक्षिक उपलब्धि: शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण वह परीक्षण है जो किसी विशेष अथवा पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों में व्यक्ति के ज्ञान, समझ और कुशलताओं का मापन करता है। प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने कक्षा 6वीं, 7वीं, और 8वीं तक के सभी विद्यार्थी जिनका क्रमश: वार्षिक परीक्षा के मूल्यांकन से प्राप्त प्रतिशत में परिणाम से है।

शैक्षिक समायोजन: शैक्षिक समायोजन का अर्थ है कि कोई व्यक्ति अपनी शिक्षा के प्रति अपने कर्तव्यों का

निर्वहन कैसे कर रहा है और क्या वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सक्षम है या नहीं।

उच्च-प्राथमिक विद्यालयः उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित जूनियर विद्यालयों के लिए पूर्व माध्यमिक विद्यालय, जूनियर हाई स्कूल, बेसिक विद्यालय जैसे कई नामों का प्रयोग किया जाता था पर अब एक विभाग-एक नाम को अपनाते हुए एक ही नाम उच्च प्राथमिक विद्यालय के नाम से जाना जाएगा।

शोध के उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गया है।

1. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाः

प्रस्तुत शोध परिकल्पना के अंर्तगत निम्न शून्य परिकल्पना का निर्माण शोधकर्त्ता ने किया है।

1. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

2. शहरी क्षेत्र के स्वत्तिपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

3. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

शोध सीमांकनः

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने अपने शोध को समय, धन एवं श्रम शक्ति तथा महत्व को ध्यान में रखते हुये शोध अध्ययन को निम्न प्रकार से सीमांकित करने का प्रयास किया है।

उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जनपद के केवल बूढ़नपुर तहसील में स्थिति ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित उच्च- प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 6वीं से 8वीं तक के छात्र और छात्राओं तक ही सीमित किया गया है।

शोध विधिः प्रस्तुत शोध हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है।

शोध जनसंख्याः प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनसंख्या के अंतर्गत आजमगढ़ जनपद के बूढनपुर तहसील के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 6वीं से 8वीं तक के छात्र और छात्राओं को जनसंख्या के रूप में चयन किया गया है।

शोध न्यादर्शः प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने न्यादर्श के अंतर्गत आजमगढ़ जनपद के बूढ़नपुर तहसिल के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित के अतंर्गत 10 उच्च-प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत 50 छात्रों एवं छात्राओं का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरणः

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने सामाजिक-आर्थिक स्थिति के मापन के लिए डॉ बी0के0सिंह और साबित्री शर्मा द्वारा मानकीकृत सामाजिक-आर्थिक स्थिति मापनी का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अंतर्गत शोधकर्त्ता ने छात्रें और छात्राओं की समायोजन क्षमता ज्ञात करने के लिए प्रोफेसर एच0एस0अस्थाना द्वारा मानकीकृत शैक्षिक समायोजन मापनी का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने छात्रों एवं छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि ज्ञात करने के लिए छात्रों का वार्षिक परीक्षाफल का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन हेतु प्रयुक्त सांख्यिकीय विधिः

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता ने प्राप्त प्रदत्तों के लिये माध्य, प्रमाणिक विचलन, माध्यमान की सार्थकता की जाँच हेतु एनोवा परीक्षण का प्रयोग किया गया।

प्रस्तुत शोध में एनोवा परीक्षण की गणना के लिए सार्थकता स्तर की जाँच हेतु विश्वास स्तर 0.05 का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषणः

प्रस्तुत शोध में प्राप्त प्रदत्तों का संकलन, विश्लेषण व व्याख्या एस0पी0एस0एस0 सांख्यिकीय प्रणाली द्वारा मध्यमान की सार्थकता विधि से निम्नलिखित सारणियों की सहायता से प्रस्तुत किया गया है:-

परिकल्पना-1

ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

विश्लेषण:

शैक्षिक उपलब्धि	एफ मान	मुक्तांश मान	सार्थकता	मध्यमान अंतर
स्ववित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों	55.554	89	.000	77.74389
वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों				

व्याख्या:

प्रस्तुत शोध में प्रदात्तों का क्रांतिक मान 55.554 प्राप्त हुआ है जिससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में तुलनात्मक अंतर है। अर्थात शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना-2

शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

विश्लेषण:

समाजिक आर्थिक स्थिति	एफ मान	मुक्तांश मान	सार्थकता	मध्यमान अंतर
स्ववित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों	44.072	89	.000	60.789
वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों				

व्याख्या:

प्रस्तुत शोध में प्रदात्तों का क्रांतिक मान 44.072 द्वारा यह स्पष्ट होता है कि शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च- प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक में सार्थक अंतर है। अर्थात् शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

परिकल्पना-3

ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक सार्थक अंतर नहीं है।

विश्लेषण:

समाजिक आर्थिक स्थिति	एफ मान	मुक्तांश मान	सार्थकता	मध्यमान अंतर
स्ववित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों	61.775	89	.000	98.867
वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालयों				

व्याख्या:

प्रस्तुत शोध में क्रांतिक मान 61.775 प्राप्त हुआ है जिससे यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक सार्थक अंतर है। अर्थात् शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

शोध निष्कर्ष:

1. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक सार्थक अंतर है।

2. शहरी क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की सामाजिक आर्थिक स्थिति का तुलनात्मक सार्थक अंतर है।

3. ग्रामीण क्षेत्र के स्ववित्तपोषित और वित्तपोषित उच्च-प्राथमिक विद्यालय के बालकों की शैक्षिक समायोजन का तुलनात्मक सार्थक अंतर है।

शैक्षिक निहितार्थ:

1. वर्तमान समय में किसी परिवार की आर्थिक आय ही सबसे महत्वपूर्ण कारक है जो परिवार को प्रभावित करता है। आर्थिक आय बालक की शैक्षिक उपलब्धि तथा साथ में उनके शैक्षिक समायोजन क्षमता को प्रभावित करती है। अत: कोई भी बालक तभी शिक्षा प्राप्त कर सकता है जब तक कि उसकी मूलभत जैविक आवश्यकतायें पूरी हो ना जाये। अत: शैक्षिक संस्थानों को ऐसे विद्यार्थियों को चिन्हित कर आर्थिक क्षति पूर्ति हेतु वजीफा प्रदान करे ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को समावेशी शिक्षा प्राप्त हो सके और वे विद्यालय में पुर्णतया समायोजित हो सके।

2. उच्च-प्राथमिक शिक्षा संस्थानों में दक्ष और योग्य शिक्षकों की नियुक्ति किया जाय जिससे विद्यार्थियों की सामाजित आर्थिक स्थिति, शैक्षिक समायोजन तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध बना रहे।

3. विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तथा शैक्षिक समायोजन क्षमता को उत्कृट बनाने हेतु अध्यापको के साथ-साथ अभिभावकगण भी अपने बच्चों के आत्मविश्वास को बढ़ाने मे सहयोग प्रदान कर सके।

भावी शोध हेतु सुझाव:

शोधकर्ता द्वारा भावी शोध हेतु सुझाव निम्न बिन्दुओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

1, प्रस्तुत शोध के आधार पर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

2, प्रस्तुत शोध के आधार पर स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत शोध के आधार पर आजमगढ़ के अन्य तहसील में भी इसी प्रकार से किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. कुमार, संदीप (2016), उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के समायोजन तथा तर्कक्षमता का एक अध्ययन, शैक्षिक परिसंवाद, ऐन इंट्रोडक्सन ऑफ एजुकेशन।
2. चित्रलेखा, कुमार मनोज जनवरी, (2015), विद्यालयी स्तर पर विद्यार्थियों की बढ़ती हुई व्यवहारगत समस्यायें- एक गम्भीर चुनौती, भारतीय आधुनिक शिक्षा ।
3. दूबे, पंकज कुमार (अप्रैल, 2015), वर्तमान शिक्षा के संदर्भ में सम्पूर्ण क्रान्ति, अध्यापक सारथी,।
4. टी0एम0 न्यूकॉम (1997). पर्सनालिटी एण्ड सोशल चेन्ज, न्यूयार्क, ड्राई एण्ड प्रेस।
5. डब्ल्यू0 ई0 मूरे (1968). सोशल चेन्ज. इन इन्टरनेशनल इनसाइक्लोपीडिया ऑफ द सोशल सांइसिज,जे0एल0 सिल्स, न्यूयार्क, मैकमिलन प्रेस, पृष्ठ 366।
6. पाण्डेय, अभिशेख कुमार (2019). ग्रामीण क्षेत्र के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की सामाजिक आर्थिक स्थिति और शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. अन्वेषण (ए मल्टीडिस्प्लिनरी जर्नल इन हिंदी, 3,1, पेज संख्या 34-40।

❖❖❖